जैन समाजात प्रचंड खपाचे व लोकप्रिय मासिक

जैन जागृति

(Since 1969) www.jainjagruti.in

६२ ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, भापकर पेट्रोल पंपा समोर, सिटी प्राईडच्या पुढची लेन, पुणे ४११०३७.
मो. : ८२६२०५६४८०, ☎ : ०२० - २४२१५५८३
मोबाईल : संजय ९८२२०८६९९७, सुनंदा ९४२३५६२९९१
संपादक व प्रकाशक : संजय के. चोरडिया
: सौ. सुनंदा एस. चोरडिया

❖ संस्थापक ❖
स्व. श्री. कांतीलालजी चोरडिया

❖ वर्ष ५२ वे ❖ अंक ५ वा ❖ जानेवारी २०२१ ❖ वीर संवत २५४७ ❖ विक्रम संवत २०७७

या अंकात	पान नं.		पान नं.
• अंतिम महागाथा - २५ : प्रकृति के संग - कर्मोंसे जंग	१५	• विक्रम संवत २०७७ के सात सोनेरी सूत्र	६३
• श्री विजय वल्लभ साधना केंद्र, जैतपुरा	२१	• श्री. प्रमोदजी दुगड, पुणे - ॲवार्ड	६४
• मराठी जैन साहित्य संमेलन - सोलापूर	२३	• इच्छाओं से मुक्त बनें	६५
• कव्हर तपशील	२४	• जीवन का स्वप्न	६६
• श्रीमती छटाकीबाई बाबुलालजी मुथा गौतमालय, पुणे - उद्घाटन	३१	• जीवन बोध - अपनी खोज	६७
• परिवार की खुशहाली का राज	३२	• सोडून द्यायला शिका	६९
• गुरु आनंद कोविड रिलीफ फंड - कृतज्ञता सभा	३३	• मुनि पुलकित कुमारजी म.सा. PH.d	७१
• कब छुटेगा प्रमाद ?	३५	• उद्याच्या सूर्यासाठी	७२
• प्राच्यविद्या मनीषी डॉ. सागरमलजी जैन	३९	• प्रेम जीवन का महामंत्र	७४
• चरित्रवान बनें	४१	• महावीर प्रतिष्ठान, पुणे	७५
• जीवन की सुन्दरता	४३	• ऋषि आनंदवन, हडपसर पुणे - उद्घाटन	७६
• प्रार्थना आत्मा को शुध्द करती है	४८	• श्री आदेशजी खिंवसरा - सन्मान	७७
• ऐसी हुई जब गुरुकृपा	४९	• श्री जिन कुशल सेवा मंडल, पुणे	७९
• मिशन सफल हो	५१	• सामायिक बीमा योजना	७९
• हास्य जागृति	५३	• डॉ. संजयजी चोरडिया - पुरस्कार	८०
		• मुनोत रक्तदान शिबीर, अहमदनगर	८०
		• सुर्यदत्ता ग्रुप, पुणे - पुरस्कार वितरण	८१
		• आचार्यश्री शिवमुनिजी - अक्षय तृतीया	८१

- पूना गुजराती बंधू समाज – भूमीपूजन ८२
- नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले ८३
- श्री. रमेशचंद्रजी बाफना – निवड ८३
- आनंदधाम फौंउडेशन, अहमदनगर ८४
- आर.एम. धारिवाल फौंउडेशन, पुणे ८५
- कार्तिक पौर्णिमा – विशेष महत्त्व ९१
- जय आनंद महावीर युवक मंडळ ९१
- सपना टूटा ९४
- धर्माच्या कॉलम मध्ये जैन लिहा ९५
- श्री. नंदकिशोरजी सांकला, नाशिक ९६
- संचेती ट्रस्ट, पुणे – दिवाळी फराळ वाटप ९७
- श्री. राजेश नहार – सन्मान ९८
- डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक, चिंचवड ९८
- गुरु आनंद तीर्थ, चिचोंडी ९९
- कुछ खोया, कुछ पाया, नया साल आया ९९
- जितो बॅडमिंटन लीग – पुणे १०१
- जैन सोशल ग्रुप इंटरनॅशनल फेडरेशन १०२
- विविध धार्मिक, सामाजिक बातम्या

जैन जागृति मासिकाचे वर्गणी दर ❖ एका वर्षात तीन मोठ्या अंकासहित

पंचवार्षिक	रु. २२००	त्रिवार्षिक	रु. १३५०	वार्षिक	रु. ५००

या अंकाची किंमत ५० रुपये.

- www.jainjagruti.in
- www.facebook.com/jainjagrutimagazine

सुसंस्कार व सदाचाराचा पुरस्कार करणाऱ्या 'जैन जागृति' मासिकाचे वर्गणीदार व्हा !

- वीतराग वाणी, आचार्य, साधू, साध्वी यांचे लेख, धार्मिक, सामाजिक व शैक्षणिक लेख, धार्मिक कथा, बोधकथा, ऐतिहासिक पुरुषांचे जीवन चरित्र, तीर्थक्षेत्र परिचय, समाज प्रबोधन लेखमाला, दीपावली पूजन विधी व मुहूर्त, आरोग्य व गृहोपयोगी लेख, विविध बातम्या इ. साहित्य जैन जागृतित प्रकाशित केले जाते.
- आपण स्वत: जैन जागृतिचे ग्राहक बना व आपले नातेवाईक, मित्र, व्यापारी बंधू इत्यादींना वर्गणीदार नसतील तर त्यांना वर्गणीदार होण्यास सांगा. • 'जैन जागृति' मासिकाची वर्गणी भरून इतरांना भेट पाठवा.

जैन जागृति वर्गणी व जाहिरात – रोख/मनिऑर्डर/ड्राफ्ट/AT PAR चेक/ पुणे चेकने / RTGS / SBI Online / Jain Jagruti Website इत्यादी द्वारा पाठवावी.

BANK ACCOUNT DETAILS - A/C Name : JAIN JAGRUTI
Bank : STATE BANK OF INDIA **Branch : Market Yard, Pune 37.**
Current A/c No. : 10521020146 **IFS Code : SBIN0006117**

'जैन जागृति' हे मासिक मालक, मुद्रक व प्रकाशक एस. के. चोरडिया यांनी प्रकाश ऑफसेट, शॉप नं. १२-१३, पर्वती टॉवर्स, पुणे – ४११००९ येथे छापून ६२ बी, ऋतुराज सोसायटी, पुणे-सातारा रोड, पुणे – ४११ ०३७ येथे प्रसिध्द केले. संपादक – एस. के. चोरडिया

"Jain Jagruti" monthly magazine is owned, printed & published by S. K. Chordia, Printed at Prakash Offset, Shop No. 12-13, Parvati Towers, Pune 411009. Published at 62-B, Ruturaj Society, Pune - Satara Road, Pune - 411 037. Editor - S. K. Chordia

टिप : या अंकात प्रसिध्द झालेल्या मताशी संपादक सहमत असतीलच असे नाही. जैन जागृति संबंधित कोणत्याही कायदेशीर कारवाईसाठी पुणे न्यायलय क्षेत्र ग्राह्य धरले जाईल.

टिप : जैन जागृति अंकात प्रकाशित लेख, बातम्या, जाहिरातीचे सर्वाधिकार सुरक्षीत आहेत.

अंतिम महागाथा

लेखक : प्रबुध्द विचारक पू. श्री. आदर्शऋषिजी म.सा.

(क्रमशः)

२५ : प्रकृति के संग-कर्मोंसे जंग

सामान्यत: मानव संकटों से दूर भागने का प्रयास करता है । संकट आने पर घबरा जाता है । अपने को असहाय समझता है । संकट से बचने के लिए सुरक्षा की खोज करता है । आदिम समय से मनुष्यों की यह प्रकृति बन गई है । धीरे-धीरे सुरक्षा दुर्बलता में बदल जाती है । यही दुर्बलता जरा सा भी संकट आने पर रुदन करने लगती है ।

महावीर और परिषह एक दूसरे के पर्याय बन गये है । जन्मों जन्म की कर्मों की बेडियों से मुक्त होने के लिए साधना पथ पर चलते हुए संकट, परिषह, उपसर्ग जो भी आते है, उनसे वे घबराते नहीं, उनसे वे दूर भागते नहीं । बचाव का उपाय भी नहीं करते । लगता है वे संकटों से प्रेम करते है । कभी-कभी तो लगता है वे स्वयं संकटों को आमंत्रण दे रहे है ।

महावीर उस पदार्थवादी युग में हुए जहाँ सिर्फ बाह्य क्रियाकांड का बोलबाला था, वहाँ आत्मा का कोई मूल्य नहीं । अगर है भी तो धर्म, स्वर्ग, नर्क की भूलभुलैया में वह बात गौण हो गई है । वे उन लोगों को अपनी साधना से संदेश विचार दे रहे है कि पदार्थ और शरीर से आगे एक आत्मसत्ता है । जिसकी शक्ति की कोई सीमा नहीं । जिसके ज्ञान से बढकर कोई ज्ञान नहीं । उस सत्ता को समझो । आत्मसत्ता को नहीं स्वीकारते हो तो इस जगत का कोई अर्थ नहीं । इस जगत में मनुष्यों का अस्तित्व इतना नगण्य नहीं है । आत्मा के अस्तित्व ने इस जड-जगत को अर्थ, मूल्य दिया है ।

आत्मा के साथ शरीर में भी अपार शक्ति है । यह उन्होंने तप-ध्यान के द्वारा बता दिया । भयानक उपसर्गों को सहकर सिध्द कर दिखाया कि तप-ध्यान और प्राणशक्ति के योग से शरीर को वज्र जैसा बनाया जा सकता है । शरीर में प्राणशक्ति सबसे महत्त्वपूर्ण है । अभ्यास से प्राणशक्ति को अमोघ बनाकर शरीर के केंद्र में केंद्रित कर उसे ऊर्जा के रुप में बदल सकते है । वही ऊर्जा शरीर के भीतर, बाहर रक्षाकवच के रुप में बदल सकते है । इसके बाद अतिंद्रिय शक्ति सहजता से ही विकसित होती है । जिससे न भूख लगती है न प्यास जागती है, न निद्रा सताती है । वह प्राणऊर्जा शीतल और उष्ण भी होती है । उस ऊर्जा का सकारात्मक और नकारात्मक रुप में उपयोग कर सकते है ।

आत्मसाधना, तप-ध्यान से महावीर को ये शक्तियाँ, सिध्दियाँ सहज प्राप्त हुई । पर वे कभी इनका उपयोग नहीं करते । राजगृह वर्षावास पूर्ण होने पर फिर से अनार्य भूमि को जाने का निश्चय किया । गोशालक को पता चला कि अनार्यभूमि की ओर जा रहे है तो बहुत देर तक बडबडता रहा । ''गुरुदेव । एक बार हम इतना मरणांतिक कष्ट पा चुके है । उसके बाद भी आप उधर जाने का सोच रहे है । वापस वहाँ से जीवित लौटना कठिन है । मैं वहाँ परेशान, दुखी हो गया । वहाँ मनुष्य नहीं राक्षस रहते है । ''गोशालक यह भी जानता है कि गुरुदेवने जिस साधना पथ पर चलने का निश्चय कर लिया, उस पर जाने से उन्हें कोई रोक नहीं सकता । फिर भी वह अपने मन को झूठी सांत्वना देकर मन को तैयार कर रहा है ।

दूसरी बार अनार्यभूमि में गये तो वहाँ भयंकर गर्मी ने उनका स्वागत किया । धरती दूर-दूर तक उजाड, बंजर पडी है । आँखों की सीमा तक कोई पेड दिखाई

नहीं देता जो शीतल छाया प्रदान कर सके । उस उजाड भूमि पर निरंतर गरम हवाएँ चलती जो शरीर की चमडी को झुलसा देती । धरती तवे की तरह तप जाती । उस निर्जन भूमि पर ठहरने के लिए कठिनाई से कोई खंडहर, वृक्ष, छप्पर मिल पाता ।

इतना निर्जन स्थान है कि मीलों तक चलने के बाद भी कोई मिलता नहीं है । वहाँ थोडे बहुत जो कुछ लोग रहते वे बहुत ही दरिद्र थे । संपन्न लोग कम ही थे वे भात मछली का सेवन करते है । जो अभाव ग्रस्त थे वे भात में नमकचूर्ण मिलाकर खाते । वहाँ दूध-दही कम ही होता था । शुध्द अन्न मिलना दुर्लभ था । महावीर उनकी निर्धनता को देख आहार के लिए नहीं जाते । उन्होंने अपने आप को इतना संयमित कर लिया कि भिक्षा के लिए जाने के बाद आहार नहीं मिला तो भी मन में समभाव रखते । अपने स्थान पर आकर ध्यान में लीन हो जाते ।

उस अनार्य प्रदेश में, जो आज सिंधप्रांत और बंगाल का कुछ भाग उससे भी आगे, दूर-दूर तक महावीर निर्भय होकर अनजान लोगों के बीच में विचरण करते है । वहाँ के निवासियों की जीवन चर्या दरिद्रता, हिंसकता, क्रूरता से परिचित हो रहे है ।

मनुष्य ऐसा क्यों बन गया ? बाह्य भू-भाग भी मानव पर कितना गहरा प्रभाव डालते है । मनुष्य इनमें परिवर्तन नहीं लाये तो ये मनुष्य में परिवर्तन कर देते है। ये जो खा रहे है उसका भी असर इनके स्वभाव, आचरण पर हो रहा है । समुद्र किनारे रहनेवाले ये सागर से उत्पन्न जलचरों से अपना जीवन चलाते है । दूसरी बात शुष्क खाना खा रहे है और सिर्फ शिकार करके अपना पेट पाल रहे है । इनकी चेतना का स्वर कितना नीचे गिर गया है । क्रूरता, लालसा, वासना ने इन्हें जड बना दिया है ।

जिनकी चेतना सुप्त, जड बन जाती है वे सृष्टि में रहनेवाले अन्य जीवों के साथ कभी न्याय नहीं करते । वे सृष्टि में चलने वाले स्पंदन, धडकन, चेतन को पकड नहीं पाते, न तालमेल बैठाते है । ये प्रकृति के विरोध में जाकर उसका या तो उपभोग करना जानते है या विनाश करते है ।

गोशालक भी तप करता है पर दो चार दिन के बाद उसको क्षुधा पीडित कराती है । वह उस समय छोटी छोटी बस्तियों में घुमता रहता । वहाँ उसे चावल बेरचूर्ण मिल जाता है, खाकर वापस गुरु के पास आ जाता । अपने आप से कहता मेरे गुरुदेव भी अद्‌भूत है, इन वृक्षों की तरह ये खडे है, तो खडे है । न कही जाते है न आते है । न कुछ बोलते है न कुछ चाहते है ।

ये प्रदेश भी कैसा सुनसान बंजर लगता है । खाने को दौडता है । यहाँ की भीषण गर्मी से मेरी चमडी भी काली हो गई है । पहले ही मेरा रंग काला, उसमें यहाँ पर शरीर को झुलसा देने वाली धूल, उसके साथ उडती धूल आँधी ने मुझे अधिक काला भुजंग बना दिया है । उस पर बढी हुई बाल जटाएँ, दाढी ने मेरा रुप उग्र बना दिया है । जिसे देखकर बच्चे स्त्रियाँ घबराकर दूर भागते है । इस अवतार से बच्चे तो क्या बडे भी डर जाते है । भगवान ने मुझे बुध्दि दी पर रुप क्यों नहीं दिया । गोशालक उदास चिंता में बैठा है ।

सोचता है अब गर्मी के बाद वर्षाऋतु आने वाली है । लगता है गुरुदेव यहाँ से चलने वाले नहीं है । इस सुनसान, कंगाल प्रदेश में ही इस समय चार मास बिताने होंगे । यहाँ तो सर छुपाने को छप्पर भी नहीं है गुरुदेव को तो क्या गर्मी, क्या वर्षा, क्या सर्दी कोई फर्क नहीं पडता, किंतु मुझे तो पडता है । कोई तो आश्रय खोजना होगा । नहीं तो यहाँ की वर्षा से मारा जाऊँगा ।

प्रकृति में परिवर्तन हुआ । प्रकृति सदा बदलती रहती है । वह जड नहीं है । नये-नये रुप, रंग, रस धारण कर उपयोगी बनती है । सडे गले को भी अपने में समाकर फिर से उसे नया रुप प्रदान करती है । लेकिन यह मानव विकसित चेतनावाला होकर भी जड बना रहता है । ठूँठ की तरह जिसमें कोई परिवर्तन नहीं क्या मनुष्य प्रकृति से भी गया बीता है ?

जेठ का महिना । इस मास में वातावरण में उमस है । पसीने की धाराएँ लग जाती है । ग्रीष्म में तपते-तपते कई पखवाडे बीत गये । अब तो तपन से प्राण भी कंठ में आ गये है । पशु-पक्षियों में घबराहट बेचैनी दिखाई देती है । रोहिणी नक्षत्र लग गया है । सृष्टि के प्राण प्रतीक्षा में है बडी आतुरता से बाट जोह रहे है, क्योंकि ग्रीष्म ने सभी को खूब तपाया है, अब शीतलता चाहते है ।

प्रतीक्षा मेघ की है । प्यास पानी की है । पानी ही जीवन है । पानी के लिए मनुष्य बहुत व्याकुल हो जाता है । पानी के लिए जरा सी देर हो जाए तो बहुत अधीर बन जाता है । प्रकृति देती है फिर भी प्रकृति पर विश्वास नहीं । पानी की इतनी प्यास, उसके लिए इतनी बेचैनी फिर स्वयं में पानी क्यों नही ?

महावीर को वर्षावास में रुकने की कोई व्यवस्था नहीं करनी है । वे स्वयं में व्यवस्थित है, स्थित है । प्रकृति में होते हुए परिवर्तन को वे देख रहे है । यह वर्षावास इस भूमि पर ही करना है । जब से वे अनार्य भूमि पर आये है । तब से बस्तियों से दूर रहकर ही अपनी साधना करते रहे । अनार्य इतने अज्ञान में डूबे हुये है कि महावीर क्या कर रहे है उसकी ओर उनका जरा भी ध्यान नहीं । उन्हें समझना तो दूर रहा बल्कि उन्हें भयानक कष्ट देते है । अपनी बस्ती से दूर भगा देते है । ऐसे में महावीर पेड का आश्रय लेते, वे सोचते ये वृक्ष एकेन्द्रिय है पर कितने उपयोगी है । मनुष्य पंचेंद्रिय होकर भी औरों के लिए दुखदायी बन जाता है ।

महावीर घने वृक्ष के नीचे ठहर गये । गोशालक पास ही में ऐसे विशाल वृक्ष को खोज रहा है, जिसके खोखले तने में घुसकर वर्षा से बचाव कर सके । पास ही में विशाल नदी बह रही है । दूर-दूर तक घना वन है, जिसमें कतार से गगन को छूते पेड है और उनसे भी ऊँचे पहाड है । ये वृक्ष, ये पहाड भी देखो ना ! ऋषिमुनियों की तरह खडे है न जाने कब से 'तप' कर रहे है । ये वर्षा, गर्मी, सर्दी की मार अपने तन पर झेलते रहते है । फिर भी हरे-भरे रहते है, खिलते रहते है, ये जीवन प्रदाता है ।

प्रकृति निस्तब्ध है । चारों ओर शांति छाई हुई है। कोई मल्लाह मल्हार राग गा रहा है और वर्षा ऋतु को आमंत्रण दे रहा है । धरती की आँख आकाश पर टिकी है । दूर-सुदूर क्षितिज पर मेघ धरती की ओर आता, झुकता हुआ दिखाई दिया । धीरे-धीरे आगे बढते-बढते उसका आकार विशाल बनता गया । उसके पीछे बादलों की सेना ने कुछ ही समय में आकाश को घेर लिया । सफेद बादल नीले, काले होते हुये गहरे छा गये। मेघों ने पहले पवन को दूत बनाकर भेजा । तूफानी हवा चलने लगी । वृक्ष डोलने लगे पवन ने धरती से धूल-झंखाड उठाकर दिशाओं को धूमिल बना दिया । मेघ टकराने लगे । धरती से मिलने पहले मैं जाऊँ इस होड में वे गरजने लगे । बूँदे आकाश से टपकने लगी । धरती से माटी की सुगंध उठी । बूँदे बडी-बडी होकर जोर से पत्तोंपर टप-टप गिरने लगी तो ऐसा लगा कि पूरे अरण्य में सैंकडों मृदंग बज रहे है । वर्षा ने जोर पकडा मृदंग अब नगाडा बन गया । घनघोर बारिश शुरु हो गई । जलधरों ने ऐसी जलधारा बरसानी शुरु कर दी कि जल-थल मानो एक हो गये ।

महावीर ध्यान में खडे है । उन्हें देखकर लगता कि कोई आदिम-मनु युगों-युगों से तपस्या में रत है । उस भूमि पर बारिश भी अनार्यों की तरह रौद्ररुप लिए जमकर बरसती रहती । उसमें पर्वतों से होकर आती हुई हवा छूरे के धार की तरह चुभती । एक बार बरसात शुरु होती तो थमने का नाम ही नहीं लेती । महावीर के शरीर पर सतत जलधारा गिर रही है । निरंतर जलधाराओं को शरीर पर झेलना यह जीवन का ही नहीं, एक योध्दा का साहस भरा काम है ।

महावीर योध्दा की तरह कर्म सेना के सामने डटकर खडे है । कर्मों ने अनादि जन्मों से पराजित किया है, इस युध्द में अब जीतना ही है । कई जन्मों में योध्दा बना । सिंह को भी मैंने पराजित किया । पर अपने किये

कर्मों से ही हार गया कर्मों से पराजित होने का कारण स्वयं के भीतर ही है। कभी क्रोध, कभी अहंकार, कभी लोभ, कभी माया, कभी आसक्ति इनकी सतत धारा मेरे भीतर में बरसती रही। बाहर में जलधरा गिर रही है भीतर में आत्मध्यान की धारा चल रही है। बाहर की अग्नि पानी से बुझती है। भीतर लगी कर्म कषायों की अग्नि ध्यान की धारा से शांत हो रही है। कर्मों की शिलाएँ टूट-टूट कर अलग हो रही है।

अनवरत जलधारा गिर रही है। भीतर में ''एगे आया'' का अंतर्बोध साथ ही चेतना की शुध्द धारा चल रही है। इस ''एक'' का गान होने पर बाहर भीतर में कोई भेद नहीं। फिर संपूर्ण जगत में चेतना का ही विस्तार दिखाई देता है।

आषाढ़मास की झमाझम बारिश बरस रही है। सृष्टि में जल कभी नगाडे, कभी ढोल, कभी झांझर का रुप लेता है। वर्षा कभी भैरवी राग आलापती कभी मल्हार...। कभी आरोहन तार सप्तक, कभी अवरोहन कभी सम पर आ जाती। वर्षा के इतने विविध रुप है कि पकड में ही नहीं आते।

गोशालक इस बारिश से घबरा गया। अंधेरी रात में जब बिजलियाँ कडकती आसमान गिरने को होता, उस समय गोशालक ऐसा चमकता कि अब मरा। अंधेरे की चादर इतनी गहरी थी कि हाथ को हाथ दिखाई नहीं देता। ऐसे में गोशालक अपने पेड के खोह में दुबक जाता।

एक दिन तो नदी का पानी बाढ़ बनकर आया। चारों ओर जल ही जल, वह तुरंत पेड पर चढ गया। गुरुदेव को देखा कमर तक पानी में खडे है। यह वही अनार्य भूमि है जहाँ गर्मी के प्रकोप से सब जलने लगता है और वही इतनी बारिश की सबकुछ डूबने लगता है।

वर्षा ऋतु में जंतुओं का प्रकोप बढ जाता है। असंख्य जंतु निर्माण होते है। महावीर के शरीर पर हजारो जंतु आक्रमण कर देते है। कुछ जंतु रक्त पिपासु होते है वे कोई प्रतिकार न देख खून पीने लगते है। शरीर छलनी हो जाता है। शरीर से खून बहने लगता है। गोशालक ये सब देखता है तो काँप उठता है पर वह क्या करता वह तो स्वयं के बचाव में लगा हुआ है। महावीर ने इस दंश-मशक परिषह को समता भाव से सहन किया। उनके आत्मशक्ति की तुलना संसार की किसी शक्ति से नहीं की जा सकती।

सावन मास चल रहा है। धरती सारी भीग चुकी है। लगता है सबकुछ तरल हो गया है। सूर्य की किरणे अभी तो कभी भी आ जाती है। तो फिर से झड़ी लग जाती है। वर्षा अब खेल रही है, कभी युवा की तरह जोश में बरसती ही जाती है, कभी वृध्द की तरह धीमी पड जाती है, कभी बच्चे की भाँति चंचल बन जाती है ये धरती की सबसे सुनहरा सौभाग्य भरा मौसम है। सभी तृप्त है। पेड-पौधे, पशु-पक्षी मानवों के चेहरे खिल उठे है बरसते पानी की चमक खुशी इनके चेहरे पर उतर आई है।

भाद्रपद ने सावन को पीछे धकेल दिया। अब बहुत हो चुका। इतना बरसना ठीक नहीं। नदी, नाले, झरने सब तो भर चुके है, इनमें पानी नहीं समा रहा है। सारी सृष्टि बह रही है और हरी-भरी हो गई है। अब नवयौवना की तरह धीमे-धीमे, रिमझिम-रिमझिम बरसती है। पर अचानक ताल छूट जाता है, जैसे कोई ढंग से नृत्य कर रहा है ताल और राग में गा रहा है, पर अचानक सबकुछ बेढंगा बेताल हो जाता है। सुर में गाते-गाते बेसुर हो जाते है। वैसे ही इस माह की बारिश का हाल है।

गोशालक निरंतर चलनेवाली बरसात से उब गया। वह तो स्वयं की खोह में बंद आत्ममुग्ध था। स्वयं की खुशी के अलावा उसे कुछ दिखाई नहीं देता वह चराचर में चल रहे दूसरों की खुशी में कैसे शामिल होता। गोशालक बारिश को कोसने लगा, उसे बारिश शत्रु लगने लगी। उसकी बोलने की आदत, इधर-उधर भटकने का स्वभाव किसी से भी उलझने को सदा तैयार ये सब वर्षा की वजह से बंद हो गया। कई बार वह भीतर ही भीतर कुड़कुड़ाता, कुलबुलाता फिर भी वह

वहाँ से भागा नहीं गुरु के पास डटा रहा । चंचल स्वभाव के कारण ध्यान नहीं कर पाता, हठयोगी था । तप कर लेता, भूखा रह लेता । मन इंद्रियाँ और स्वभाव पर नियंत्रण नहीं होता, किंतु वह इसपर सोचता ही नहीं । वह प्रतीक्षा में था कब बरसात बंद हो, वर्षावास पूर्ण हो। गुरुदेव यहाँ से चले ।

इस वर्षावास में गुरु की दृढ़ता देख, वह स्वयं भी थोडा दृढ़ बना । गुरु के प्रति विशेष श्रध्दा से उसका मन भर गया । वह गुरु की ओर देखता है, सोचता है क्या अद्‌भूत बात है कि चार माह इस अनार्य प्रदेश की भीषण बारिश, शरीर को जमा दे ऐसी सर्दी, जंतुओं का भयानक उपद्रव, खाना-पीना कुछ भी नहीं, इतना मृत्युदायी कष्ट फिर भी गुरुदेव के मुख से उफ् तक नहीं। यह सब देखकर उसका सर चकरा जाता है । वह बार-बार गुरु को प्रणाम करता है । सचमुच में अब मुझे विश्वास हो गया कि मेरे गुरु इस लोक के नहीं किसी दूसरे ग्रह से आये है । अरे ! यह भी क्या बात हुई बोलना नहीं, खाना नहीं, पीना नहीं, कही जाना नहीं फिर करना क्या ? ये तो पागल कर देनेवाली स्थिति है । सही में गुरुदेव आप धन्य है ।

कोहरा धरती अंबर के भेद को मिटा रहा था । बारिश विदा हो चुकी है । सर्दी का मौसम दस्तक दे रहा है । वर्षावास पूर्ण हुआ । महावीर आत्मजगत से बाह्यजगत में आये, उन्हें सब-कुछ सहज लगा । बारिश से जैसे सबकुछ धुल जाता है, वैसे ही सतत तप-ध्यान से कर्म मल धूल गये । आत्मा निर्मल हो गई। यह बाह्य जगत कितना सुंदर है । अंतर जगत इससे भी अधिक सुंदर । अंतर के सौंदर्य की पहचान हो जाए तो यह बाह्य सुंदरता में फँसता नहीं है । बल्कि बाह्य सुंदरता को ज्ञाता द्रष्टा भाव से लेता है ।

महावीर ने देखा गोशालक प्रतीक्षारत है । गुरु की दृष्टि पडते ही वह निहाल हो गया । चार माह से वह वंचित रहा । सन्मुख आकर बार-बार भूमिपर लेटकर प्रणाम करता है, गुरु के गुणगान करता है । आर्यभूमि की ओर पुन: यात्रा शुरु हो गई । अनार्यभूमि का यह प्रवास लंबा रहा । अनार्यभूमि की दो बार की यात्रा ने पूरी-पूरी परीक्षा ली । कष्ट, यातना देने में मनुष्य पीछे नहीं रहा । प्रकृति के प्रकोप भी कम नहीं थे । मानवों ने तो बडी क्रूरता से महावीर के शरीर पर अपनी हिंसा का प्रयोग किया ।

महावीर की मैत्री, करुणा ने उनका प्यार से स्वागत किया । हिंसा, आतंक, क्रूरता का एक दिन अंत होता है । ये गंभीर घाव छोड जाते है । लेकिन मैत्री-प्रेम-करुणा में इतनी ताकत है कि हर गहरा घाव भर देते है । महावीर इतने कष्ट, हिंसा के बीच भी अपने भीतर किसी के प्रति कोई कटुता नहीं, प्रेम ही पाते ।

गोशालक की खुशी देखते ही बनती । वह नाच रहा है गा रहा है । क्योंकि गुरुदेव फिर से आर्यभूमि लौट रहे है ।

''गुरुदेव ! ये अनार्यभूमि कितनी भयंकर है । यहाँ के निवासी उससे भी अधिक भयंकर ।''

''वत्स ! चार माह के बाद गुरु मुख से अपने लिए संबोधन सुन हर्ष विभोर हो गया । आत्मसाधना, कर्मनिर्जरा, ध्यान और आत्मबल साधने के लिए इससे अच्छी भूमि कौनसी होगी ?''

मैं देखता हूँ तुमने भी इस चार मास में आत्मबल का परिचय दिया । कुछ शक्ति का जागरण तुम्हारे भीतर हुआ है । इस शक्ति को जागृत रखना । प्रमाद मत करना । मूर्च्छा में मत पडना । सत्य के मार्ग पर चलना । हर्ष से गुरुदेव के वचन सुनता रहा पर गुणा नहीं, चिंतन नहीं किया । वह तत्काल प्राप्त होनेवाली चीजों के पीछे भागनेवाला जीव था । सत्य तत्काल कहाँ मिलता है ।

महावीर का लक्ष्य परम सत्य है, आत्मतत्व है । चेतना की अमृत धारा जहाँ मरण भी अमरता में समा जाता है वही लक्ष्य है । वे इस लक्ष्य को प्राप्त करते वक्त कभी ध्यान योगी, कभी तप-योगी, कभी समतायोगी, कभी समन्वय योगी, कभी सत्यप्रयोगी, कभी संतुलन योगी, कभी तत्वयोगी पर सच में वे आत्मयोगी है । (क्रमश:) ●

कव्हर तपशील - जानेवारी २०२१

❖ **आचार्य विजय वल्लभ सुरिजी म.सा. प्रतिमा**

श्री विजय वल्लभ साधना केंद्र, जैतपुरा, राजस्थान मध्ये युगदृष्टा आचार्य श्री वल्लभ सुरिजी म.सा. यांच्या १५१ इंच उंचीच्या प्रतिमाचे अनावरण भारताचे पंतप्रधान श्री. नरेंद्रजी मोदी यांच्या हस्ते संपन्न झाले. (बातमी पान नं. २१)

❖ **श्रीमती छटाकीबाई मुथा गौतमालय**

वडगाव शेरी, पुणे येथील श्रीमती छटाकीबाई बाबुलालजी मुथा गौतमालयाचा नामकरण व उद्घाटन कार्यक्रम २२ नोव्हेंबर २०२० रोजी उपाध्याय श्री. प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा यांच्या सान्निध्यात संपन्न झाला.

पुणे येथील उद्योजक व क्षेत्रपाल प्रतिष्ठान व आनंद तीर्थ चिचोंडी येथील प्रमुख ट्रस्टी श्री. सुभाषजी बाबुलालजी मुथा यांच्या मातोश्री श्रीमती छटाकीबाई बाबुलालजी मुथा यांचे नाव गौतमालयाला देण्यात आले. या प्रसंगी श्री. सुभाषजी मुथा, सौ. शोभा मुथा व मुथा परिवार. (बातमी पान नं. ३१)

❖ **गुरु आनंद कोविड रिलीफ फंड**

गुरु आनंद फौंडेशन तर्फे विविध धार्मिक, सामाजिक कार्य कायम करण्यात येत आहे. कोविड या राष्ट्रीय आपत्तीत सर्वांना मदत करण्यासाठी गुरु आनंद कोविड रिलीफ फंड स्थापन करण्यात आले.

रिलीफ फंडास दानदात्यांनी भरघोस दान दिले व गौतमनिधीच्या असंख्य कार्यकर्त्यांनी कोविडच्या काळात प्रत्यक्ष जागेवर जावून केलेले कार्य यामुळे हे सर्व शक्य झाले. अशा सर्व कार्यकर्त्यांचा सत्कार करण्यात आला.

यावेळी शांतीनगर येथील श्री. दिलीपजी कटारिया यांचा सत्कार करताना श्री. रमणलालजी लुंकड, श्री. रविंद्रजी नहार, श्री. सतीशजी सुराणा इ. (बातमी पान नं. ३३).

❖ **आर. एम. धारिवाल फाऊंडेशन, पुणे**

ऑनलाईनच्या माध्ममातून यु ट्युब वर पू. रमणीकमुनीजी म. सा. यांच्या उपस्थितीत उवसग्गहरं स्तोत्र संगीतमय सामूहिक पठणाचे भव्य आयोजन आर. एम. धारिवाल फाउंडेशनच्या अध्यक्षा जान्हवी रसिकलालजी धारिवाल व उपाध्यक्षा शोभा रसिकलालजी धारिवाल यांच्या द्वारे रविवार ता. ८ नोव्हेंबर २०२० रोजी बिबवेवाडी जैन स्थानक, पुणे येथे करण्यात आले होते. (बातमी पान नं. ८५).

❖ **डायग्नोपिन डायग्नोस्टिक, चिंचवड – उद्घाटन**

चिंचवड स्टेशन रोडवर डायग्नोपिन डायग्नोस्टिकच्या नवीन सेंटरचे उद्घाटन पिंपरी-चिंचवड पालिका आयुक्त श्री. श्रवणजी हार्डिकर यांच्या हस्ते करण्यात आले. सोबत डायग्नोपिनचे संचालक श्री. प्रफुलजी कोठारी व कोठारी परिवार. (बातमी पान नं. ९८).

❖ **नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले –**

पुणे : नगरसेवक प्रवीण चोरबेले यांनी कोरोनाच्या कालावधीत केलेल्या विविध मदतकार्याचा 'कार्य अहवालाचे' प्रकाशन भाजपचे प्रदेशाध्यक्ष आणि

आमदार मा.श्री. चंद्रकांतदादा पाटील यांच्या हस्ते नुकतेच झाले.

या प्रसंगी भाजप शहराध्यक्ष जगदीश मुळीक, पुण्याचे खा. गिरीश भाऊ बापट, माजी मंत्री हर्षवर्धन पाटील, माजी राज्यमंत्री दिलीपजी कांबळे, आमदार माधुरीताई मिसाळ, पुण्याचे महापौर मुरलीधर मोहोळ, पुणे शहराचे सरचिटणीस राजे जी. पांडे, नगरसेवक श्री. प्रवीणजी चोरबेले व नगरसेवक व पदाधिकारी आदि उपस्थित होते.
(बातमी पान नं. ८३)

❖ **ऋषि आनंदवन, हडपसर, पुणे – उद्घाटन**

हडपसर, पुणे येथे 'ऋषि आनंदवन' हे जय आनंद ग्रुप तर्फे उभारण्यात आले. याचा उद्घाटन समारोह २३ नोव्हेंबर २०२० रोजी उपाध्याय श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा यांच्या सान्निध्यात संपन्न झाला. (बातमी पान नं. ७६)

❖ **संचेती ट्रस्ट, पुणे – फराळ वाटप**

स्व. इंदुमती बन्सीलालजी संचेती ट्रस्टच्या वतीने मार्केट यार्ड पोलीस ठाण्यातील सर्व कर्मचाऱ्यांना व अधिकाऱ्यांना दिवाळी फराळ व बासमती तांदूळ वाटप कार्यक्रमाचे आयोजन उद्योगपती अभय संचेती यांनी केले होते. या कार्यक्रमाला महाराष्ट्र काँग्रेसचे सरचीटणीस अभय छाजेड, मार्केट कमिटीचे प्रशासक मधुकांत गरड, चेंबरचे अध्यक्ष पोपटलाल ओस्तवाल, मार्केटयार्ड पोलीस स्टेशनचे वरिष्ठ पोलीस निरीक्षक विवेकानंद वाखारे यांची प्रमुख उपस्थिती होती. (बातमी पान नं. ९७).

❖ **श्री. प्रमोदजी दुगड, पुणे – अॅवार्ड**

कोरोना काळात व्यावसायिक आणि दुगड ग्रुपचे चेअरमन श्री. प्रमोदजी दुगड यांनी केलेल्या समाजकार्याची दखल घेऊन त्यांचा द लेक्झिकॉन ग्रुप तर्फे सन्मान करण्यात आला. दुगड यांना राज्यपाल भगतसिंग कोश्यारी यांच्या हस्ते गौरवण्यात आले. (बातमी पान नं. ६४).

❖ **श्री राजेशजी नहार, पुणे – सन्मान**

श्री गुरु चंपक पारस चातुर्मास कमिटी द्वारा शत्रुंजय तीर्थ, कोंढवा, पुणे येथे चंपकगच्छ नायक प.पू.श्री पारसमुनिजी म.सा., श्री आदित्यमुनिजी, श्री पंकजमुनिजी ठाणा ३ यांचा भव्य चातुर्मास संपन्न झाला. चातुर्मास कमिटी तर्फे यशस्वी चातुर्मास केल्याबद्दल अध्यक्ष श्री. राजेशजी पन्नालालजी नहार यांचा २९ नोव्हेंबर रोजी विशेष सन्मान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ९८).

❖ **प्रा. डॉ. संजयजी चोरडिया, पुणे – पुरस्कार**

लायन्स क्लब ऑफ पुणे ट्वेन्टी फर्स्ट सेंच्युरी प्रतिष्ठान व लायन्स फ्रेंडस् यांच्या संयुक्त विद्यमाने सुर्यदत्ता ग्रुप ऑफ इन्स्टिट्यूटचे संस्थापक अध्यक्ष प्रा. डॉ. संजय चोरडिया यांना 'लायन्स समाज रत्न पुरस्कार' राज्याचे साखर आयुक्त शेखर गायकवाड यांच्या हस्ते प्रदान करण्यात आला. (बातमी पान नं. ८०).

❖ **श्री. आदेशजी खिंवसरा, पुणे – सन्मान**

पुणे येथील सामाजिक व धार्मिक कार्यात सतत अग्रेसर युवा कार्यकर्ते श्री. आदेशजी खिंवसरा यांना कोरोना या महामारीच्या संकट काळात केलेल्या अद्वितीय कार्याबद्दल युगल धर्म संघ, पुणे व वडगाव शेरी संघ, पुणे तर्फे ''कोविड योध्दा पुरस्कार' देऊन गौरवण्यात आले.
(बातमी पान नं. ७७).

जास्तीत जास्त जैन समाजापर्यंत
पोहचण्याचा सर्वांत खात्रीशीर,
सर्वांत सोपा व सर्वांत स्वस्त मार्ग...
जैन जागृति